प्रातःक्लास 27.3.68 ओमशान्ति ''अपन को आत्मा समझो''

ओमशान्ति। रूहानी बाप रूहों से रूह–रूहान कर रहे हैं। रूहों को समझा रहे हैं कि अपन को आत्मा समझो। बाप को याद करने से तुम्हारे जो भी पाप है वह सभी भस्म हो जावेंगे। सिर्फ इस जन्म के पाप नहीं हैं, जन्म–जन्मांतर के मूतपलीती आत्माएं हैं। आत्मा जो सच्चा सोना था उसमें खाद पड़ने से फिर शरीर भी पतित होता गया है। फर्क भी देखने में आता है। यह देवताएं गोरे थे। फिर सांवरे हो गये हैं। तुम जानते हो हमारी आत्मा पवित्र होने से फिर वहां शरीर भी शुद्ध प्रकृति से बनेगा। अभी तो प्रकृति ही अशुद्ध है। वह शुद्ध होगी बाप को याद करने से। आत्मा तो ज़रूर शुद्ध चाहिए ना। आत्मा को शुद्ध करने लिए बाप को याद करना होता है। इसको ही कहा जाता है वफादार–फरमानबरदार–आज्ञाकारी। बाप तो कल्याण के लिए ही समझाते हैं। जितना बाप को याद करेंगे तो ऐसा फूल बन जावेंगे। फूलों में भी नम्बरवार होते हैं ना। आपे ही अपन को मियां, मिट्ठू नहीं समझना है। कर्तव्य से समझ में आता है यह किस प्रकार का फूल है। बच्चों का कर्तव्य है हरेक को बाप का पैगाम देना कि बाप को याद करो। खुद याद में होंगे तो पैगाम भी दे सकेंगे। खुद ही याद नहीं करते होंगे तो वह सच्चा मैसेन्जर नहीं ठहरे। जबकि सच्च–खण्ड में चलना है तो रीयलिटी में सच्चा बनना है। गपोड़ा नहीं मारना है; क्योंकि साथ में धर्मराज भी है ना। वह है हिसाब–किताब चुक्तू करने वाला। न बनेंगे तो धर्मराज हिसाब लेंगे। कैसे सज़ाएं आदि मिलती हैं वह भी बच्चों ने सा. किया है। सजाओं का जिस द्वारा सा. कराया था वह भी नहीं है। भागन्ती के लाइन में चली गई। दिखाया तो भी सुधरी नहीं। माया कितनी प्रबल है। बाबा से पूछा गया था जो सज़ा भोगती है उनका क्या हिसाब–किताब होगा। बोला इनके बहुत पाप कट जायेंगे। धर्मराज ने इतनी सज़ाएं दिखाईं तो भी देखो बाप से बेमुख हो पड़ी। सज़ा भी देखो फिर भी.....जैसे ऊँट होता है वह पानी से बहुत डरता है। अपने ही मूत में उनका पैर थिरकती है। तो गिर पड़ते हैं। मनुष्य को भी ऊँट कहा जाता है। मनुष्य भी अपने मूत के कारण कितना गिर पड़ते हैं। मूत पलीती बन जाते हैं तो गिर पड़ते हैं। बाप कहते हैं तुमको एक–दो पर मूतना न चाहिए। काम कटारी चलाना यह है एक–दो पर मूतना। बाप कितने कड़े अक्षर कहते हैं। ऑर्डीनेन्स निकालते हैं बच्चों मैं आया हूं मूत पलीती वालों को गिरने से बचाने। एक–दो पर मूतो मत। सन्यासी भी इस कारण कहते हैं नारी नर्क का द्वार है। अभी यह तो तुम्हारा है प्रवृत्तिमार्ग। उनका वह है निवृत्तिमार्ग। वह कभी भी राजयोग सिखला नहीं सकते हैं। सन्यासी गृहस्थियों को अपना फॉलोवर्स बना न सके। तुम्हारा गृहस्थ आश्रम पवित्र था ,वही अभी अपवित्र बना है। इसको फिर पवित्र बनाना है। तो नर–नारी दोनों को पवित्र बना(बनना) पड़े। दोनों ही नर्क का द्वार है। फिर स्वर्ग का द्वार बनते हैं। वर्ल्ड की हिस्ट्री–जॉग्राफी रिपीट होती है। जो ल.ना. स्वर्ग के मालिक थे वही फिर नर्क में मूत पलीती बने हैं। नर्क का द्वार बने हैं। फिर दोनों नर और नारी को स्वर्गवासी बनना है। तुम बच्चों को यह ज्ञान मिला है। और कोई को यह ज्ञान नहीं। सन्यासी कहते हैं नारी नर्क का द्वार है। यह तुमको बहुत बड़े अक्षरों में लिखना चाहिए। यह स्लोगन बहुत अच्छी रीत लिखनी चाहिए। शंकराचार्युवाचः नारी नर्क का द्वार है, ... ज्ञान सागर पतित–पावन त्रिमूर्ति शिव भगवानुवाचः नारी और नर दोनों स्वर्ग के द्वार हैं। तुम भी अभी स्वर्ग के द्वार खोल रहे हो। जो खोलेंगे वही उसमें प्रवेश करेंगे ना। और कोई की स्वर्ग में प्रवेशता नहीं होती। बाबा ने यह भी समझाया था कि सारी सृष्टि इस समय कोस–घर है। यह प्वाइन्ट् भाषण में पता नहीं समझाते हैं वा नहीं। हरेक अपने सेन्टर का सर्विस–समाचार जगदीश को भेज देते हैं। यह अच्छा है मैगज़ीन वा अख़बार निकालते हैं तो उनमें यह रूहानी बातें डालनी हैं। इसको रूहानी सर्विस समाचार कहा जाता है। बाकी अख़बारों में तो है जिस्मानी समाचार। तो यह रूहानी समाचार भी छपना चाहिए। सभी समझते हैं मैगज़ीन में सर्विस समाचार पड़ता है तो सभी जगदीश को भेज देते होंगे। अच्छी–2 बातें डाल सकते हैं। यह तो सत्य बात है ना। नारी को सर्पणी समझते हैं; परन्तु ऐसे तो है नहीं। सतयुग में भी नारी का संग तो

है ना; परन्तु वह है पवित्र। यहां माया का राज्य है तो स्त्री को देख ठहर नहीं सकते हैं। वहां माया का राज्य ही नहीं तो ठहर सकते हैं। रामराज्य में कर्म अकर्म हो जाते हैं। रावण राज्य में कर्म विकर्म बन जाते हैं। मूल बात पापों की हो जाती है। तो लिखना है नर और नारी। वह भल नारी लिखें। तुम तो हो प्रवृत्तिमार्ग वाले। नारी और नर दोनों ही श्रीमत पर स्वर्ग का द्वार खोलते हैं। बाप (ज्ञ)ान का सागर होने के कारण ही पतित–पावन कहलाया जाता है। सृष्टि के आदि, मध्य, अंत का ज्ञान सिवाय बाप के और कोई में नहीं है। आगे के ऋषि–मुनि भी नहीं जानते थे। वह तो राजोगुणी ही होंगे। सन्यासियों को यह सतो, रजो, तमो, का भी ज्ञान नहीं है। जो रचयिता और रचना के आदि, मध्य, अंत को जानते ही नहीं। अभी बाप तुमको नॉलेज दे रहे हैं। वह है स्वर्ग का रचयिता तो तुमको भी स्वर्ग का मालिक बनाने लिए कहते हैं मामेकं याद करो तो तुम पवित्र बन स्वर्ग के मालिक बन जावेंगे; इसलिए तुम पूछते हो सतयुगी स्वर्गवासी हो या कलियुगी नर्कवासी हो? यह भी तुम इस संमगयुग पर ही पूछते हो। इस पुरुषोत्तम संगमयुग का कोई भी मनुष्यमात्र को पता नहीं है; इसलिए यह अक्षर भी घड़ी–2 लिखनी चाहिए। भूलना न चाहिए। अक्सर करके बच्चे पुरुषोत्तम संगमयुग में पुरुषोत्तम अक्षर लिखना भूल जाते हैं। अभी तुम बच्चे समझते हो इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही पुरुषोत्तम होता है। मनुष्य हैं अज्ञानी लोग। अज्ञानी भक्तों को कहा जाता है। जिनके लिए बाप कहते हैं मेरे से मिल सके। मेरे से ज्ञान द्वारा ही मिल सकते हैं। भक्तों को ज्ञान का सागर बाप ही आकर ज्ञान सुनाते हैं। भक्ति में चलते–2 सीढ़ी नीचे ही उतरते जाते हैं। अथाह भक्ति है। ज्ञान तो चपटी का काम है। पढ़ कर पास किया। बस तुम फूल बन जाते हो। तुम समझते हो इस कॉलेज में कौन–2 कितना पढ़ते हैं और फिर पढ़ाते भी हैं। टीचर तो सभी को बनना ही है। टीचर भी तुम हो, कोई–2 टीचर भी एकदम गन्दे बन पड़ते हैं। कोई सुने, कहेंगे ऐसे अपवित्र भी रहते हैं। बाबा ने कब नाम नहीं निकाला है कि फलानी ऐसी है; इसलिए कोई भी उनको सेन्टर पर आने न देवें। कहां–2 लाचारी आने भी देना पड़ता हैं उनके ही कल्याण के लिए। नहीं तो फिर कहां जावें? ऐसे भी हैं, बेहद के बाप से, अरे , भगवान से प्रतिज्ञा करके भी फिर गन्द में गिर पड़ते हैं। आधा कल्प की टेव पड़ी हुई है ना। कहते भी हैं ना कुत्ते के पूंछ को कितना भी नेरे में डालो तभी भी सीधा नहीं होता। अभी बाप कहते हैं विकार में जा डॉग मत बनो। गॉड–गॉडेज बनो। फिर भी पुरुषार्थ करते–2 दोनों ही डॉग और वीच बन जाते हैं। बाप कहते हैं यह देखो डीटी डिनायस्टी है ना। गॉड–गॉडेज की डिनायस्टी है। नाम देवी–देवता कहा जाता है। विलायत वाले भी इनको गॉड–गॉडेज कहते हैं। लार्ड कृष्णा कहते हैं; परन्तु यह अक्षर ठीक नहीं है। महाराजा–महारानी ल.ना. ठीक है। वह हैं देवी–देवताएं आजकल तो बहुतों को फलानी देवी कह देते हैं। हैं बिल्कुल नहीं। किसी में दैवीगुण अच्छे होते हैं तो भी कहते हैं इनमें तो देवताई गुण हैं। बच्चे समझते हैं आसुरी दुनियां में तो कोई दैवीगुण होती ही नहीं। हां, कोई–2 अच्छे रिलीजियस माइन्डेड होते हैं। उन्हों के रहने, करने भी बड़ी अच्छी होती है ; परन्तु वह कोई सच्चे–2 वैष्णव नहीं हैं। काम–कटारी चलाते हैं। तो वह भी कसाई ठहरे। बाबा ने कहा था लिखना चाहिए भगवानुवाचः काम महाशत्रु है। भगवान का नाम भी लेना पड़े। बाप बड़ा ज़ोर से समझाते हैं। तुमको भी लिखना ज़रूर है जो उन्हों के कानों में पड़े। बाप सिर्फ तुम भारतवासियों को नॉलेज देते हैं। जो आदि सनातन देवी–देवता धर्म में थे। बाप कहते हैं मैं भारत में ही आता हूं। भारत जैसा पवित्र खण्ड और कोई बनता नहीं। पवित्र फिर आधा कल्प बाद एकदम अपवित्र बन जाते हैं। जब पवित्र देवताओं का राज्य होता है तो दूसरे खण्ड होते ही नहीं। यह सारा अभी तुम्हारे में है। और किसी में नहीं है। तुम कोई से भी पूछ सकते हो रचयिता और रचना को जानते हो? कब भी जवाब दे नहीं सकेंगे। जानते ही नहीं हैं। तुम्हारे बिगर कोई भी परिचय दे न सके। तुमको भी बाप से परिचय मिला है। वह तो बाप को ही नहीं जानते। सर्वव्यापी कह कितनी ग्लानी कर

देते हैं। इसमें डरने की कोई बात नहीं। तुम कह सकते हो भगवानुवाच काम महाशत्रु है। यह है ही विकारी दुनियां। निर्विकारी दुनियां बिल्कुल अलग है। इनको कोई स्वर्ग थोड़े ही कहेंगे। भारतवासी पतित विकारी यहां भी अपन को स्वर्ग का मालिक समझते हैं। समझते हैं हमको धन है, ज़ेवर हैं, एरोप्लेन है, यही स्वर्ग है। उन्हों की बुद्धि में है हम यहां ही स्वर्गवासी हैं। बाप कहते हैं जो अपन को स्वर्ग में समझते हैं, उनको छोड़ दो। स्वर्गवासी हम बनावें ही क्यों? पुकारा भी द्रौपदी ने है ना। यह हमको नंगन करते हैं। इनसे बचाओ। अभी बाप तुम बच्चों को पावन बना रहे हैं। कहते हैं अपने अन्दर देखो हम बन्दर को वरने लायक हैं या ल.ना. को वरने लायक देवता हैं। (भक्त) तो सभी बन्दर ही बन्दर हैं। बाप ने यह उठाई है रावण पर जीत पाने लिए। इनका अर्थ भी बड़ा गुह्य है। दुनियां यह राज समझ न सके। तुम बच्चों को प्वाइन्ट्स तो बहुत मिलती रहती है। राम–लीला ग्राउण्ड में तुम ऐसी–2 बातें समझा सकते हो। डरने की बात ही नहीं। तो मनुष्य समझ जाये बाप संगम पर ही आते हैं। मनुष्यों की सूरत भल मनुष्य की है, सीतर है बन्दर की। बाप आकर दैवीगुण धारण कराते हैं, जो फिर आधा कल्प लिए स्थाई हो जाती है। 21 जन्मों का फल मिलता है। बच्चे जानते हैं हमारी सेना ही रावण पर जीत पाती है। बाकी भक्तिमार्ग में तो सभी बातें उल्टी लगा दी हैं। कितनी ग्लानी कर दी है। अभी तुम जानते हो हम पुरुषार्थ कर यह देवता बनते हैं। फिर वाममार्ग में जाते हैं तो पहले–2 शिव की पूजा करते हैं। उस समय धन बहुत रहता है। तो हीरे का लिंग बनाते हैं। फिर बाद में उनको ही काला बना देते हैं। तमोप्रधान में ले जाते हैं। मनुष्य खुद भी तमोप्रधान बन जाते हैं ना। तुम शिव के मन्दिर में भी जाकर समझा सकते हो। आज नहीं समझेंगे, कल–परसों ज़रूर समझेंगे। पूंछ तो सभी का सीधा होना ही है। नहीं तो पूंछ भी काट लेंगे। आग लगा देंगे। पूंछों को आग तो लगनी ही है। बन्दरों के पूंछों को तो आग लगेगी तो लंका जल जावेगा। विचार–सागर–मंथन कर अच्छी रीत रिफाइन कर लिखना चाहिए। युक्ति ऐसी र(च)नी चाहिए जो सभी के हाथ में आवे और समझे बरोबर हमको पैगाम मिला था। हमने ध्यान नहीं दिया। अभी टाइम तो पड़ा है ; इसलिए तुम पूछते हो समयुगी हो या कलियुगी हो? जो पूछते हैं वह ज़रूर जानते होंगे; इसलिए तुमको तरस पड़ता है। बोलो सतयुगी बनना है तो आओ हम आप को बतावें। बनाते भी कितना सहज है। बाप को याद करने से तमोप्रधान कट निकल जावेगी। बाप तो है ही एवर प्योर। बच्चों को भी ऐसा ऊँच बनाते हैं। फिर नीचे उतरना ही है। कट चढ़नी ही है। सभी पर कट चढ़ जाती है। कट चढ़ी हुई चीज़ को घासलेट में डालते हैं उतारने लिए। तुम्हारा भी बुद्धि योग बाप से होगा तो कट उतरती जावेगी। अगर कट रह जाती है तो फिर सज़ा खानी पड़ती है। तुम जानते हो माला आठ की ही हैं जो पास विद ऑनर होते हैं। यह बड़ा इम्तहान है। इसमें ही बहुत फेलियर होते हैं। बाप ने समझाया है देवी–देवता धर्म वालों का ही कनेक्शन है। जो द्वापर के बाद आते हैं वह फिर भी द्वापर के बाद ही आवेंगे। वह स्वर्ग में जा नहीं सकते। जो स्वर्ग में आये होंगे वही फिर रिपीट करेंगे। तो इन सभी बातों पर विचार सागर मंथन कर धारण करना है और में तंत निकाल लिखना है। यह भी बाबा ने कहा था कोई भी बड़ी घटना देखो तो ब्रह्माकुमारि(यों) के नाम से लिख सकते हो। यह तो कोई नई बात नहीं। फलाना मरा, फिर 5000 वर्ष बाद ऐसा ही होगा 5000वर्ष पहले भी हुआ था। बूढ़ा हो छोटा हो हार्टफेल तो कोई का भी होता है। फौरन अखबार में आदि लिखना चाहिए जो पढ़ सके। ऐसी कोई खास बात हो तो मुख्य 5–7 अखबारों में डालो। यह तो 5000 वर्ष पहले भी हुआ था। सो फिर रिपीट करते रहेंगे। घड़ी–2 अखबार में तीक–2 लगाते रहना चाहिए। आखरीन तो मनुष्य की बुद्धि खुलेगी। यह भी अखबार में वा मेग्ज़ीन में लिख सकते हो। द्वापर से लेकर कोस–घर बन गया है। सतयुग–त्रेता. में था अहिंसा देवी–देवता परमोधर्म। और यहां है हिंसा। इनको ही आसुरी धर्म कहेंगे। ऐसी–2

बातें लिखो जो बहुत पढ़े। मैगज़ीन तो सिर्फ ब्राह्मण बच्चे ही पढ़ते हैं। और तो इससे कुछ समझेंगे नहीं। लिटरेचर से कोई समझ जाये मुश्किल है। अपने बच्चे भी मैगज़ीन से पूरा समझ नहीं सकते हैं। तो औरों की क्या बात है। कई तो मैगज़ीन पढ़ते भी नहीं हैं। कई बाबा की टेप भी नहीं सुनते हैं। दिल से हरेक पूछे हम रेग्यूलर मुरली पढ़ते हैं या अपने नशे में रहते हैं? एक दिन भी मुरली नहीं पढ़ते तो अबसेन्ट पड़ जाता है। रेग्यूलर स्टूडेन्ट कब अबसेन्ट नहीं डालते। सावधानी नहीं मिलने से कोई न कोई विकर्म बन जावेंगे। मंसा का कोई पाप नहीं लगता है। कर्मणा में किया तो पाप बन जावेगा। मंसा में तूफान बहुत आवेंगे तुमको गिराने। कर्म इन्द्रियों से कोई भी बुरा कर्म नहीं करना है। सबसे बड़ा है काम विकार। उसमें गिर(गिरे) तो सारी कमाई चट हो जावेगी। फिर नये सिरे मेहनत करनी पड़े; इसलिए बाबा सीढ़ी ऊपर चढ़ाते रहते हैं। तो कहते थे भाई–बहन समझो; परन्तु देखो इनमें भी नुकसान होता है; इसलिए अभी भाई–2 समझो तो बाप याद रहेंगे। बाप की याद से विकर्म जल्दी विनाश होंगे और बाप के पास चले जावेंगे। देह का भान टूट जावेगा। तुमको ऐसे शरीर छोड़ना है जैसे सर्प का मिसाल है। सन्यासी भी ब्रह्म में लीन होने लिए ऐसे बैठे–2 शरीर छोड़ते हैं; परन्तु ब्रह्म में तो कोई जा नहीं सकते हैं। जैसे काशी करवट खाने से पाप मिट जाते हैं फिर भी जन्म–जन्मांतर में तो आना ही है। वापस तो कोई जा नहीं सकते। वह लोग ब्रह्म में लीन होने लिए ही (मेह)नत करते हैं। देह का भान टूट गया तो बाकी रही आत्मा। इससे भी शान्ति मिल जाती है। बाप ही आकर शान्ति का रास्ता बताते हैं। उनको यह पता नहीं है हम फिर भी जन्म लेंगे। अच्छी अवस्था वाले शरीर छोड़ते हैं तो उनकी महिमा भी होती है। उनमें ताकत रहती है। सभी कुछ आपे ही मिलता है। वह सभी है भक्तिमार्ग। तुम हो प्रवृत्तिमार्ग वाले। तुम ऐसे फूल बनते हो। अपन को देखना है कहां तक हम बाबा को याद करते हैं। फिर आप समान भी बनाना पड़े। सर्विस करनी पड़े। अच्छे सर्विसएबुल बच्चों को बाबा दौड़ाते रहेंगे। सर्विस करो। यहां बैठ कर क्या करेंगे? यह भी बाबा ने समझाया है पहले–2 कोई को अलफ़ का सबक देना है तो समझे। बेहद का बाप कल्प पहले भी आया था। स्वर्ग स्थापन किया था। अभी फिर बाप आये हुये हैं। बाप स्थापना ही करते हैं प्रवृत्तिमार्ग की। यह राजयोग है ना। वह निवृत्तिमार्ग वालों का धर्म ही अलग है। यह भी राजयोग सिखलाय न सके। राजयोग तो भगवान को ही आकर सिखलाना है। यह ल.ना. पवित्र प्रवृत्तिमार्ग वाले थे। अभी हैं विकारी प्रवृत्तिमार्ग वाले। इन देवताओं के आगे जाकर महिमा करते हैं तुम पवित्र हो , हम अपवित्र हैं। अभी तुम समझते उन्हों के आगे माथा कैसे टेकें। उतरते–2 हम यह बने हैं। फिर हम पुरुषार्थ कर यह बनेंगे। तो अन्दर खुशी होनी चाहिए ना। अपन को देखना चाहिए हम लायक बने हैं? नारद भक्त को भी कहा ना अपनी सिकल देखो। तो देखो(खा) हम तो बन्दर हैं। तुम कह सकते हो कोई भी देवता बन न सके; क्योंकि ..... सतयुगी देवी–देवता धर्म की स्थापना करने वाला बाप ही है। समझाने से कोई भी झट समझ जावेंगे। कोई .....से आवेंगे। कुछ न कुछ समझ कर जावेंगे। यह पैगाम सभी के लिए है। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। वही पतित–पावन है। एक को याद करो तो एक धर्म की स्थापना हो जायेगी। ऐसे नहीं सभी धर्म एक बन जावेंगे। वह तो हो न सके। अभी तुम बच्चे समझते हो मनुष्यों की बुद्धि कितनी मूर्ख है। कुछ भी समझते नहीं; इसलिए तुम समझाते हो कि तुम भारतवासी हो सतोप्रधान थे फिर तमोप्रधान बने हो। फिर अभी सतोप्रधान बनना है। दिल अन्दर खाना चाहिए हम सर्विस तो करते नहीं हैं। सर्विस करने लिए तो जाना बड़े। जाकर पैगाम देना पड़े। भगवानुवाच मामेकं याद करने से यह बनेंगे। ये पैगाम भी किसको नहीं दे सकते तो बर्थ नॉट अपेनी कहेंगे। समझना चाहिए हम सर्विस नहीं करते हैं तो पद भी नहीं मिलेगा। पुरुषार्थ करना चाहिए हमको ऐसा खुशबूदार फूल बनना है। बाबा रोज़ दो/तीन प्रकार के फूल ले आवेंगे। अक के फूल भी यहां हैं ना। अच्छा, मीठे–2 बच्चों को बाप दादा याद प्यार गुडमॉर्निंग और नमस्ते। ओमशान्ति।